Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि–एक नव प्रणयन

सत्येन्द्रनाथ शुक्ल,
पूर्वशोधछात्र,
संस्कृतविभाग, कला संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश,
भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 126-131
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

सारांश – अवतरणिका एवं प्रणामाञ्जलि से संवलित इस महाकाव्य में आदि शङ्कराचार्य के दिव्य चरित्र का पवित्र गान है। जो अपनी परम्परा को जहाँ एक ओर समृद्ध करती है, वही दूसरी ओर अन्य परवर्ती कवियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है। रस संयोजन, अलङ्कार विन्यास, वर्णन वैभव, छन्दोविधान, कथानक एवं पात्रों के सफल चरित्र चित्रण महाकाव्य के काव्यशास्त्रीय ऐश्वर्य को द्योतित करते हैं।

मुख्यशब्द – आदि शङ्कराचार्य, अवतरणिका, प्रणामाञ्जलि, महाकाव्य, काव्यशास्त्रीय।

वेदों को शाश्वत ज्ञान का स्रोत मानने वाली भारतीय परम्परा में अनेक ऐसे विद्वान, मनीषी एवं ऋषि हुए हैं; जिन्होंने विश्व के कल्याणार्थ शाश्वत् मूल्यों का प्रचार–प्रसार किया और यहीं से अवतारवाद का विकास हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश में अथवा सम्पूर्ण विश्व में 20वीं व 21वीं शताब्दी में ज्ञान–विज्ञान एवं बौद्धिक क्रान्ति तो हुई परन्तु यह कटु सत्य है कि इसी क्रम में नैतिकता एवं मानवता का ह्रास होता रहा। इसी के फलस्वरूप जहाँ पाश्चात्य जगत् में मानवतावाद, मानववाद, उत्तर–आधुनिकता आदि विचारों का उदय हुआ है, जो समाज का पथ प्रदर्शक बना। भारतीय समाज के सन्दर्भ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जहाँ एक ओर अनेक प्राचीन नैतिक मान्यताएँ टूटीं वहीं स्वयं या पश्चिम से प्रभावित होकर नवीन नैतिक मापदण्डों की सर्जना भी हुई। इन्हीं के बीच समाज को एक दिशा प्रदान करने हेतु, अपनी समृद्ध सौहार्द्र, त्याग आदि दैवीय गुणों से युक्त 'तेन त्यक्तेन भुञ्~जीथाः' अनुप्राणित इस देश में, भोगवादी, जड़वादी विचारों, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अनाचार, स्वार्थपरता, अनैतिकता आदि को देखकर व्यथित होते हुए कवयित्री शाश्वत एवं निरपेक्ष नैतिक मूल्यों के स्थापनार्थ राष्ट्रीय अखण्डता के परिपोषक, चतुष्पीठों के संस्थापक, विशृंखलित उपासनाओं, विश्वासों, मतों एवं सम्प्रदायों को एकसूत्र में पिरोने वाले अद्वैतवाद के संस्थापक, उपनिषदों के भाष्यकार, सर्वशास्त्र विचक्षण, ज्ञान एवं भक्ति के समन्वयक, परमयति शङ्करावतार आचार्य शङ्कर के व्यक्तित्व को आधार बनाकर काशी की पण्डित परम्परा में परिगणित परम विदुषी आचार्या डॉ0 कमला पाण्डेय ने भगवान श्रीमच्छङ्कराचार्य के जीवनवृत्त का अवलम्बन करते हुए 1020 छन्दों में उपनिबद्ध अह्वनात्मक महाकाव्य का प्रणयन किया है। 17 सर्गों के अतिरिक्त 29 छन्दों की अवतरणिका तथा 11 छन्दों की प्रणामांजलि में अनेक सामयिक पक्षों को प्रस्तुत किया व परमशक्ति की अनुकम्पा से जगत् की दुव्यर्वस्था जनित पीड़ा से विगलित चेतना ने इस अनुपम काव्य

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

की सर्जना की है। वस्तुतः कृति कवयित्री की अद्वितीय भावयित्री एवं कारयित्री प्रतिभा की द्योतक है। कवयित्री इनमें विश्वमानवतावाद, अनेकता में एकता, राष्ट्रियचेतना, महिला सशक्तीकरण स्पृश्यता निवारण, पर्यावरण चेतना, लोकगीतों आदि नवीन विषयों की उद्भावना की गयी है। यह महाकाव्य वर्ष 2007 में प्रकाशित है। जो भगवान शङ्कर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के साथ–साथ एवं वैदुष्य से प्राचीन भारतीय उदात्त परम्परा के पुनरुद्धार का भी वर्णन किया है।

प्रश्न उठता है कि कवयित्री ने वर्तमान दुर्व्यवहार से मुक्ति पाने के लिए भगवान् शङ्कराचार्य के जीवन को ही आदर्श रूप में क्यों बनाया।

यद्यपि साहित्य समकालीन घटनाओं का कलात्मक प्रतिफलन होता है तथापि इतिहास पुराण के विचारों या पूर्वजों के चरितों को हम एकदम अप्रासङ्गिक नहीं कह सकते हैं। उनका समावेश आधुनिक साहित्य में अवांछित नहीं है। आज हम अपने पूर्वजों की स्तुति को करते हैं परन्तु उनका अनुशीलन नहीं करते। आज इतिहास पुराणों एवं पूर्वजों, महापुरुषों के चरित्रों का पुनराख्यान आवश्यक है। इस पुनराख्यान के साथ–साथ समकालीन संस्पर्श स्वतः आ जायेंगे।[1]

उक्त बातों को ही ध्यान में रखकर डॉ0 पाण्डेय ने अपने ऐतिहासिक पूर्वज शंकर के व्यक्तित्व को लेकर काव्य का प्रणयन किया है। कोई भी महान व्यक्तित्व किसी देश एवं काल की सीमा में न तो बंधता है और न ही उसे किसी प्रकार की शक्ति बांध सकती है। तथापि प्रस्तुत महाकाव्य में आचार्य शङ्कर का समय निर्धारित करते हुए कवयित्री ने **उनका समय श्लोक संख्या 1/44,46,47,48 में सिद्ध किया** तथा 788 ई0 को निरस्त करते हुए 507 ईसा पूर्व माना है।

जिस महान व्यक्तित्व को कवयित्री ने अपने रचना का विषय बनाया है। यह वह महान व्यक्तित्व है जिसके बारे में पं0 नेहरू ने अपने ग्रन्थ 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' में चर्चा की है कि पं0 जी लिखते हैं कि– ''मैं सन् 1935–36 में यूरोप–भ्रमण पर गया था। मैं फ्रांस के पेरिस विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध प्रोफेसर ऐण्ड्रे माल्राक्स से मिलने गया। उन्होंने मिलते ही मुझसे पूछा कि वह कौन सी शक्ति थी जिसने आज के सहस्राधिक वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म को बिना किसी रक्तपात या संघर्ष के ही भारत से निर्मूल कर दिया?'' पं0 नेहरू ने इस प्रश्न का उत्तर शंकराचार्य के जीवन–दर्शन और उनकी संगठन शक्ति का वर्णन करते हुए बड़े विस्तार से किया है।

यद्यपि यह बात सत्य है कि महापुरुष किसी युग विशेष में पैदा होकर भी उस युग विशेष तक सीमित नहीं रहते वे तो अपनी लोकमंगल एवं सर्वहिताय की भावना के कारण सभी लोक व काल के हो जाते हैं। आचार्य शङ्कर इसी प्रकार की शाश्वत एवं जाज्वल्यमान तेजपुंज है जिनका भारतीय दर्शन एवं संस्कृति में विशेष स्थान है।

वैसे आचार्य शंकर के जीवन के सन्दर्भ में उनके शिष्यों या उनके समय के किसी विद्वान ने कहीं विशेष चर्चा नहीं की है। उनके दिवंगत होने के लगभग 5 सौ वर्ष बाद स्वामी विद्यारण्य ने काव्य के रूप में उनके जीवन पर प्रभाव डाला। विद्यारण्य के **'श्री शंकर दिग्विजय'** 1386 परवर्ती अनेक विद्वानों, कवियों ने अपने ढंग से भगवत्पाद के जीवनवृत्त पर प्रकाश डाला।[2] शंकर के जीवन व उनके क्रिया–कलापों का क्रमबद्ध इतिहास न प्राप्त होने का सम्भवतः यही कारण रहा होगा कि संन्यासी वर्ग की परम्परा के अनुसार वे लोग अपने जीवन के सन्दर्भ में चर्चा करना न तो स्वयं पसन्द करते थे और न ही दूसरों को यह अधिकार देते थे। वस्तुतः संन्यासी नियमपूर्वक अपने कर्मों का त्याग करता है जिसे उपरति कहते हैं–

निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरणमुपरतिः अथवा विहितानां कर्मणा विधिना परित्यागः।[3]

यही उपरति ही मूल कारण है कि जिससे संन्यासी संन्यास को दीक्षा लेने के पूर्व के जीवन की बातों को न तो सुनना चाहता है न ही किसी को सुनाना चाहता है। चाहे जो रहा हो परन्तु प्राचीन भारत के अनेक प्राचीन अभिलेखों जो इण्डो चाइना से प्राप्त हैं, में 'भगवान शङ्कर' का इस नाम से शङ्कराचार्य को सम्बोधित किया गया है। महाकवि हर्ष ने अपने महाकाव्य नैषधीयचरितम् में आचार्य शङ्कर का नाम 'भगवान् शङ्कर' कहकर अत्यन्त श्रद्धा के साथ

1. नया ज्ञानोदय अक्टूबर 2013/19/एस0के0 पोट्टेक्काट्ट भारतीय ज्ञानपीठ विजेता
2. आदिशङ्कराचार्य जीवन और सन्देश, जून 1991
3. वेदान्तसार/पृ. 9

उल्लेख किया है। भगवान शङ्कर के जीवन एवं चरित के बारे में सूचना देने वाले दो विद्वान मुख्य हैं– महामहोपाध्याय प्रो0 जयंत कृष्ण एच दवे एवं महामण्डलेश्वर स्वामी महेशनन्द गिरि आदि हैं; जिन्होंने शङ्कराचार्य के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने वाले प्राचीन स्रोतों को समाज के सामने उपस्थित किया।

कवयित्री ने अपने ग्रन्थ में शंकर के चरित्र का आश्रय लिया है। स्वातन्त्र्योत्तर रचनाओं में अनेक ऐसी रचनाएँ हुई हैं, जो अपने पौराणिक आख्यानों, वर्णनों को अपनी रचना का विषय बनाया तथा नवीन उद्भावना प्रस्तुत की है तथा समाज को नयी दिशा प्रदान की इनमें उत्तरसीताचरितम्, जानकीजीवनम्, गणपतिराज्योदयम् आदि परिगणित हैं। इसी क्रम में समाज को एक दिशा देने, संस्कृत साहित्य को समृद्ध करने के उद्देश्य से जगत की दुव्यर्वस्था जनित पीड़ा से विगलित होकर प्रस्तुत अनुपम महाकाव्य का सर्जन की है।

कलहाऽन्धतमश्छेत्तुमद्वैतकिरणैः शुभैः।
भगवान् शङ्कराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि।।[4]

महाकाव्य का स्वरूप– प्रस्तुत महाकाव्य में भगवान शंकराचार्य के चरित का वर्णन है। 17 सर्गों में विभक्त इस महाकाव्य के नायक शंकर प्रधान रस शांत तथा सज्जनाश्रय वृत्त है। धर्म की प्राप्ति एक फल है। अवतरणिका के रूप में नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण है। पर्वतों, नदियों का वर्णन है। कवयित्री ने सर्गों का नामकरण नहीं किया है। यहाँ पर शंकर का जन्म ही पुत्रोदय का वर्णन है। ऋतुओं में वर्षा, ग्रीष्म का वर्णन तथा पर्वत में विन्ध्याटवी, हिमालय का उदात्त वर्णन है। इस प्रकार से कवयित्री ने प्रबन्ध काव्य के आवश्यक एवं अनिवार्य अनेक तत्वों का समावेश भाव एवं अवसरों के अनुसार स्थान–स्थान पर प्रस्तुत किया है। ग्रन्थ में महाकाव्य के आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तत्त्वों का पालन है। कवयित्री ने अनेक स्थलों पर शङ्कराचार्य के स्तोत्रों के एकपाद को लेकर अनेक पद्यों की रचना की है; जो शङ्कराचार्य के स्तोत्रों की तरह माधुर्य से युक्त है–

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
कीर्तयन् भक्तिभावाञ्चितः कोविदो
मूर्तिमस्थापयत् सुस्थिरां रोधसि।।[5]

पर्वत वर्णन – शंकर के बदरिकाश्रम की यात्रा के समय हिमालय का वर्णन 5 छन्दों में किया है। जिसकी पवित्रता से प्रभावित होकर शंकर ने उत्तराम्नायपीठ की स्थापना का संकल्प लिया–

यस्य प्रशान्ते विपिने सुरम्ये, मृगो मुदा धावति कृष्णसारः यज्ञाङ्गनिष्पादकशैलराजं, हिमालयं द्रष्टुमथ प्रतस्थे।।[6]

नदी वर्णन– शिष्य मंडली के साथ जब शङ्कर प्रयाग पहुँचते हैं। उस समय कवयित्री ने त्रिवेणी का वर्णन किया है।

यद्वा समालिङ्गति शुक्लधारा, कृष्णां यदा वीचिकरैरसंख्यैः।
कालावधिं जातु विहाय दृष्टे–ऽमापूर्णिमे किं युगपद मिलन्त्यौ।[7]

नर्मदा नदी के वर्णन के प्रसङ्ग में कवयित्री ने शङ्कराचार्य के नर्मदाष्टक की कतिपय पंक्तियों को लेकर अत्यन्त मनोहर वर्णन किया है–

उत्तुङ्गात् शिखरात् प्रपातधवलामावर्तमालाधरां
पारावारतटोज्ज्वलोपलशिलादोर्भ्यां समालिङ्गिताम्।
दर्शं दर्षमनेकभावलहरीरुद्भावयन् मानसे
वैराग्येऽप्यनुरागनिर्झरझरन् श्रीषङ्करोऽषोभत।।[8]

4. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि/पृ. 21
5. वहीं/3/34
6. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि/7/03
7. वहीं/8/5
8. वहीं/3/54

ऋतु वर्णन– भारत में छः ऋतुएँ मानी गयी हैं जिनमें तीन ऋतु इस प्रायद्वीप में सदैव रहती हैं। अतः इसका वर्णन प्रायः सभी महान् कवियों ने किया है। कालान्तर में ऋतुओं का वर्णन महाकाव्य एक अङ्ग व आवश्यक तत्त्व बन गया कवयित्री ने भी ऋतु वर्णन क्रम में प्रायः सभी ऋतुओं का वर्णन किया है। परन्तु जीवनदायिनी वर्षा का वर्णन अत्यन्त मनोरम है; जिससे कृषि प्रधान इस भारतभूमि की कृषिप्रियता द्योतित होती है। एक गीत का प्रणयन किया है–

वारि झर्झरायते अरे!
पयोधरैर्मनोहरैः समावृतेऽम्बरे!!
दाहकः प्रचण्डताप, ईषदद्य शान्तिमापः
नाऽनिलोऽनलायते अरे!
पयोधरैर्मनोहरैः समावृतेऽम्बरे!
नूपुराः क्वचित्क्वणन्ति, तन्त्रिका मृदु स्वनन्ति;
रागिनी स्वरायते अरे! पयोधरै.....।
अश्रुविन्दवः पतन्ति, गोपिकाः, प्रियं स्मरन्ति
माधवः स्मरायते अरे! पयोधरै.....।[9]

कवियत्री नें अपनें ग्रन्थ में जहाँ स्मृति वाक्यों का समर्थन करती हैं। जैसे अनेक वर्षों तक सन्तान की प्राप्ति न होनें पर आर्यम्बा एवं शिवगुरू अपनें जीवन को व्यर्थ समझने लगे।

अपत्यहीनं क्रमशो व्यतीतं तयोर्दिनं मासमनेकवर्षम्।
शनैः शनै यौवनमव्यतीतं स्वजीवनं व्यर्थमिव प्रतीतम्।।
कुटुम्बिनाऽपुत्रवता प्रदत्तां जलाञ्जलिं भावि विलुप्यमाने।
विशङ्कमाना परिदेवयन्तो वाष्पाम्बुसिक्तं पितरः पिबन्ति।।[10]

परन्तु दोहद काल के वर्णन में स्त्रियों के श्रुति श्रवण के सन्दर्भ में आपने उदारता का परिचय दिया है। दोहद का वर्णन कवियत्री की नवीन उद्भावना है। गर्भवती आर्यम्बा ने जो–जो दोहद प्रकट किया, उन सभी का कारण आपने गर्भ में शंकर का होना माना है।

कवयित्री की यह उद्भावना वैज्ञानिक एवं भारतीय परम्परा से अनुप्राणित है। हम जन्म का कारण प्रारब्ध को मानते हैं। तात्पर्य यह है कि शिशु गर्भ में अपनें प्रारब्ध के साथ आता है, जिसका प्रभाव मा पर होता है। अस्तु माँ आर्यम्बा की वेद सुनने की इच्छा हुई। क्यों कि उनके गर्भ में भगवान् शङ्कर स्वयं विराजमान थे।

पतिर्यदाऽध्यापयति स्म वेदं, सैकाग्रचित्ता श्रवणेऽनुरक्ता।
यतः श्रुतेरूत्तम भाष्यकर्ता विवर्धमानो विललास तस्याम्।।[11]

कवयत्री ने अनेकता में एकता जो इस भारतभूमि की प्रधान विशेषता है को भी काव्य के माध्यम से एवं सगुण एवं निर्गुण के समन्वय की विराट चेष्टा भी दृष्टिगोचर होती है; जो श्लाघनीय है –

यथाऽनुविद्धं सलिलेषु चन्दनं तथाऽनुविद्धं सकलेषु निर्गुणम्।
अनेकतायां ददृशे य एकतां नमामि तं शंकरदेशिकं वरम्।।[12]

वर्तमान समय में जहाँ विश्व के अनेक देश राष्ट्रवाद, एवं अतिराष्ट्रवाद की भावना पर बल दे रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व परमाणु बम पर बैठा प्रतीत होता है, तब विश्व मानवतावाद का समर्थन कवियित्री करती है तथा विश्व को नीड़ होने की कल्पना की है।

जगदिदमनुकूलं दृश्यतादेकनीडम्

9. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि/2/45
10. वहीं/1/23, 24
11. वहीं/1/41
12. वहीं/प्रणमाञ्जलिः/6

इति मनसि विचिन्त्ये श्रौतवाक्यं ब्रुवाणः।
उपदिशतु मनुष्यान् शुद्धवेदान्ततत्त्वं
विजित–भुवन–कीतिः साम्प्रतं श्रेयसे नः।[13]

अस्पृश्यता निवारण

अस्पृश्यता जो भारत में व्याप्त बहुत बड़ा अभिशाप है; जिसको समाप्त करने के लिए अथवा इसके विरोध में समय–समय पर मुखर विरोध के स्वर उठाए जाते रहे हैं। आधुनिक काल में महात्मा गांधी हरिजन आदि पत्रिका के माध्यम से तथा अछूतोद्धार आदि कार्यक्रमों के द्वारा अस्पृश्यता निवारण को प्रोत्साहित किया। इस क्षेत्र में डॉ. अम्बेडकर का महनीय योगदान सर्वविदित है। सामाजिक चेतना के इस पक्ष पर विचारकों व समाजसुधारकों के अतिरिक्त साहित्यकारों ने भी इस विषय पर प्रचुर मात्रा में विचार किया। उक्त विषय को अवलम्बित कर प्रायः समस्त भारतीय भाषाओं में कविताओं, निबन्धों व उपन्यासों का प्रणयन हुआ। इस सामाजिक दुर्व्यवस्था पर आचार्या ने भगवान् शङ्कर के चरित्र के माध्यम से प्रहार किया है। आचार्य शङ्कर व काशी के अन्त्यज के संवाद को अत्यन्त रोचक रूप में वर्णित किया है–

तदानीं स ऊचेऽन्त्यजो भो महात्मन्!
निवार्योऽधुना को विचार्य ब्रवीतु।
शरीरं मनो वा उत प्रत्यगात्मा
किमद्वैतबोधेऽपि ते द्वैतभावः।।
किमन्नेन निर्मीयमाणं शरीरं
पृथग्भिद्यते वा उताहो शरीरी।
यदुक्तं श्रुतावेकमेवाऽद्वितीयं
वचस्ते न सङ्गच्छते तेन नूनम्।।[14]

इस महाकाव्य में शंकराचार्य के जीवनवृत्त के वर्णन के साथ ही अनेक स्थलों पर सामाजिक समस्याओं की भी उठाया गया है तथा विसंगतियों के समाधान के बारे में भी चर्चा की गयी हैं स्पृश्यता जो भारतीय समाज में व्यादा बहुत बडा अभिशाप रहा है, जिसकी समाप्ति के लिए महात्मा गांधी ने अपनी प्रसिद्ध पत्रिका हरिजन के द्वारा, तथा अम्बेडकर ने बहुत महत्वपूर्ण प्रयास किया। यद्यपि न तो शंकर ने और न ही कवियत्री ने वर्णाश्रम धर्म का विरोध किया है। दोनों को व्यवहार एवं परमार्थ के अनुसार परिभाषित करते हैं। इसी प्रकार से समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर भी कुठाराघात किया गया है।

तत्क्षेत्रे शङ्कराचार्यो निषिध्य नृवलिप्रथाम्।
पाखण्डोन्मूलनं कृत्वा, भक्ति मार्गमुपादिशते।।[15]

महिला सषक्तीकरण

बीसवीं शताब्दी में प्रायः समस्त भारतीय भाषा साहित्य मे अन्य आधुनिक विषयों के साथ महिला सशक्तीकरण को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया। संस्कृत साहित्य में इस विषय को स्वतन्त्र रूप में प्रोत्साहित करने का श्रेय पण्डिता क्षमाराव को प्राप्त है; इन्होंने अपनी कहानी विधवोद्वाह सनुटम्, परित्यक्ता किमहं पतिता एवं कलरवश्चिन्ता च में अनेक ज्वलन्त प्रश्नों को उद्घाटित किया है। महिला सशक्तीकरण के इस दौर से कवयित्री भी अछूती नहीं रहीं। महाकाव्य के स्त्री पात्रों आर्याम्बा, उभयभारती तथा राजा सुधन्वा की रानी के चरित्र के माध्यम से नारी के अबला पक्ष को नकारते हुए उसके स्नेह, दया, शाश्वतशक्ति, सरसता की मूर्ति आदि दैवीय रूपों में चित्रित किया है–

दुर्गा दुर्गतिनाशिनी विजयते काली कराला रणे

13. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि / अवतरणिका / 8
14. वहीं / 5 / 26–27
15. वहीं / 2 / 50

काशी या त्रिपुरारिराजनगरी भागीरथी स्वर्धुनी।
'राष्ट्री संगमनी' तथा 'चिकितुषी' प्रोक्ता श्रुतौ सादरं
'वन्दे मातर'मित्यमूल्यवचनेरुक्तर धरा पावनी।।
पूज्या स्यात्पुरुषैः सदा सरसतामूर्तिः कृपावर्षिणी
पुष्टिं तुष्टिमहर्निषं विदधती जाया मनोहारिणी।
कौमारी भगिनी सुताऽथ जननी स्निग्धा प्रसन्नानना
गार्हस्थ्यं तनुते सदा सहचरी पत्नी तदर्धाङ्गिनी।।[16]

जैसा की हम जानते हैं, साहित्य समाज का दर्पण है। हम साहित्य हीन, समाज की तो कल्पना कर सकते हैं, परन्तु समाज हीन साहित्य की कल्पना कभी नही की जा सकती। अतः कवि की रचना में अनेक बार लोक व्यवहारों प्रयोगों, रीतियों आदि का वर्णन होता है जो श्रेष्ठ साहित्य का आवश्यक तत्व भी है– इसी क्रम में आचार्या ने भी कतिपय लोकोक्तियों का प्रयोग किया है–

अहो दीप ज्योतिनिर्कटतलभूः पश्यति न हि।[17]

लोकोक्ति एवं मुहावरों का ही नही अपितु आचार्या ने नीति तत्त्वों को भी अत्यन्त व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया है तथा सूक्तियों का प्रयोग किया है –

समत्व दृष्टिर्महतां दयालो!, साधावसाधावुभये कृपालो![18]
विरोधो नैव कर्तव्यो, महसां राशिभिः सह।
अहो! तिरस्क्रिया तेषां, कल्याणाय न कल्पते।।[19]

राष्ट्रिय चेतना

प्रस्तुत महाकाव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर पग–पग पर विद्यमान है। वह समाज में व्याप्त पाखण्ड के उन्मूलन तथा आतंकवाद आदि से मुक्ति के लिए शंकर का आह्वान करती है–

दिशि– दिशि पुनरहा प्रायशो वर्धमानः
सपदि निरसनीपः हन्त! पाखण्डवादः।
अहह! रूधिर पातैः त्रासदाताऽऽततायी
कथम् उपशमनीयस्तावदातक्ङवादः।।[20]

पर्यावरण चेतना

कवियित्री ने पर्यावरण चेतना को भी अपने इस काव्य में स्थान दिया है। यद्यपि कवियित्री का ''रक्षत गङ्गाम्'' यह एक स्वतन्त्र गाङ्गेय पर्यावरण चेतना से अनुप्राणित ग्रन्थ है। इस महाकाव्य में –

जल–पवन–मृदां वा दूषणादन्तरिक्षाद्,
उपलबहुलवृष्टिः शातयत्येव सस्यम्।
कृषक–गण–विषादं वर्धयन्ती प्रकामं
प्रभवति पुनरीतिविष्टपेऽमङ्गलाय।।[21]

उक्त छन्द में प्रदूषण से फसलों के नष्ट होने से दुखी किसानों को चित्रित किया गया है जो विदर्भ को इंगित करता प्रतीत होता है। छन्दों के विधान में जहाँ कवयित्री ने शास्त्रीय छन्दों का प्रयोग किया है, वहीं सोहर नामक लोकगीत, वर्षागीत आदि को भी लिया है। शंकर के जन्म पर स्त्रियाँ गातीं हैं –

16. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि / 11 / 22–23
17. वहीं / 14 / 54
18. वहीं / 1 / 17
19. वहीं / 14 / 59
20. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि / अवतरणिका / 17
21. वहीं / अवतरणिका / 18

कथयति सुरयुवतिः अपि धन्यतमे सुभगेः
अवतरितः कः सुप्रकाशमयो भवने तव ए।[22]

कवयित्री ने अत्यन्त लालित्यपूर्ण व अनुप्रासयुक्त पदशय्या का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त अनेक अलङ्कारों का विधान किया है।

भारते दक्षिणस्यां सुरम्योऽञ्चलः
नारिकेर–द्रुमाच्छादितः श्यामलः
शोभते ताल हिन्ताल–पूगीफल
पिप्पलैला लवंगादिभिः पुष्कलः।।[23]

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि अवतरणिका एवं प्रणामाञ्जलि से संवलित इस महाकाव्य में आदि शङ्कराचार्य के दिव्य चरित्र का पवित्र गान है। जो अपनी परम्परा को जहाँ एक ओर समृद्ध करती है, वही दूसरी ओर अन्य परवर्ती कवियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है। रस संयोजन, अलङ्कार विन्यास, वर्णन वैभव, छन्दोविधान, कथानक एवं पात्रों के सफल चरित्र चित्रण महाकाव्य के काव्यशास्त्रीय ऐश्वर्य को द्योतित करते हैं।

अतः स्वातन्त्र्योत्तर काल में समाज व साहित्य को दिशा एवं गति प्रदान करने वाली एक भाव प्रवण रचना है।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची –

1. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि / लेखिका डॉ. कमला पाण्डेया / प्रकाशक– विद्याश्रीधर्मार्थन्यास, वाराणसी / 2007
2. रक्षत गङ्गाम् / लेखिका डॉ. कमला पाण्डेया / प्रकाशक– विद्याश्रीधर्मार्थन्यास, वाराणसी
3. नया ज्ञानोदय / अक्टूबर 2013 / प्रकाशक–भारतीय ज्ञानपीठ
4. आदिशङ्कराचार्य जीवन और सन्देश / प्रकाशक–सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार / जून 1991
5. वेदान्तसार / सदानन्दयति / व्याख्याकार– रमाशङ्कर त्रिपाठी / चौखम्बा पब्लिशर्स वाराणसी

22. वहीं / 1 / 50
23. भगवान् शंकराचार्य आविर्भूयात् पुनर्भुवि / 1 / 1